Dr.Raman Kumar Thakur

Asstt.prof.(Guest)Department of Economics, D.B.College,jaynagar.

Class:-B.A.part-2(H)paper-3rd

Date:-15-10-2020. Lecture n.-15.

Topic:- * आर्थिक विकास का प्रतिष्ठित सिद्धांत (The Classical Theory of Economic Development)

:- प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों ने तकनीकी प्रगति और जनसंख्या वृद्धि के रूप में आर्थिक विकास की प्रक्रिया को विश्लेषित किया।इन लोगो ने श्रम विभाजन,जनसंख्या की समस्या, पूंजी निर्माण,बाजार की अपूर्णता एवं स्वतंत्र व्यापार, श्रम की कार्यकुशलता, वितरण राजस्व इत्यादि पर अपना ध्यान केंद्रित किया। एडम स्मिथ, रिकार्डो, 'मिल' और माल्थस की ही विचारधारा को क्लासिकल (प्रतिष्ठित) विचारधारा माना जाता है । आर्थिक विकास संबंधी इनके मॉडल आज भी प्रासंगिक और काफी महत्वपूर्ण है जो उत्पादन फलन निवेधाबादी नीति, पूंजी- संचय, श्रम विभाजन, लाभ विनियोग की प्रेरणा, लाभ की घटती प्रवृत्ति, मानव संसाधन इत्यादि से संबंधित है। इनके सिद्धांत आर्थिक विकास के समग्र सिद्धांत का गत्यात्मक विवेचन है जैसा कि बाल्डविन ने लिखा है

"Classical Economics is an Outstanding illustration of a Dynamic Aggregative theory of Development. "

इस प्रकार प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों के आर्थिक विकास मॉडल को एक सामान्य रूप में निम्नांकित ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है:-

1). निवेधा बादी नीति (Laissez-faire policy)

2) व्यापार चक्र(Trade Cycle)

3) पूंजी संचय(Capital Accumulation)

4)लाभ निवेश की प्रेरणा(Motivation for profit-Investment)

5)लाभ घटने की प्रवृत्ति(Trend of Decreasing profits)

6)पूर्ण रोजगार की परिकल्पना(Ful employment Hypothesis)

(7)राज्य का न्यूनतम हस्तक्षेप(Minimum State Intervention)

8)स्थिर अवस्था(Stationary state):-

* प्रतिष्ठित सिद्धांत की आलोचनात्मक समीक्षा(Critical Evaluation of Classical Theory):-

1) मध्यम वर्ग की अवहेलना ।2)सार्वजनिक क्षेत्र उपेक्षित है ।3)तकनीकी प्रगति की उपेक्षा। 4)क्रमागत उत्पत्ति हास नियम का त्रुटिपूर्ण प्रयोग।

5) अवास्तविक नियमों की मान्यता।

6) मजदूरी लगान एवं लाभ की गलत व्याख्या।

7)अवास्तविक विकास प्रक्रिया।

8) अर्ध-विकसित देशों के लिए गलत व अव्यवहारिक ।

9) गत्यात्मक तत्वो का अभाव।

10).दीर्घकालीन दृष्टिकोण।